https://www.echetana.com/Vol.-09, No.-04, Oct.-Dec. 2024, pp. 23-24

CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम और शिक्षको की बदलती भूमिका

सीमा शर्मा
सह-आचार्य
रामा-कृष्णा टीटी कॉलेज, जयपुर
Email-simigaur2@gmail.com, Mob- 9664123798

First draft received: 16.10.2024, Reviewed: 27.10.2024, Final proof received: 15.11.2024, Accepted: 15.12.2024

सार-संक्षेप

राष्ट्र का विकास व्यक्ति के चहूँमुखी विकास पर आधारित है. व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का समग्र विकास तभी संभव है जब शिक्षा वांछित उद्देशयो की प्राप्ति में सफल होती है. शिक्षा वह साधन है जो मानव जीवन को कुशल, यथार्थ एवं समृद्ध बनाती है. आदिकाल से शिक्षा ने मानव विकास की अनेको संभावनाओ को व्यक्त किया है. प्राम्भ से लेकर वर्तमान (NEP 2020) तक समय एवं परिस्थिति की मांग अनुसार शिक्षा व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन होते रहे हैl (NEP 2020) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को जुलाई 2020 को जारी किया गया. यह नीति शिक्षा प्रणाली एवं शैक्षणिक सुधारो एवं परिवर्तन की दृष्टि से महत्वपूर्ण मील का पत्थर कही जा सकती है.

मुख्य शब्द : *समग्र विकास, व्यक्ति, समाज, राष्ट्र आदि.*

प्रस्तावना

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य शिक्षा में कुशल शिक्षक प्रशिक्षण के मानको को बढ़ाना एवं शिक्षा प्रणाली में नियामक ढांचा नीतियों का पुनर्निर्माण करना है l

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षक के महत्व को स्वीकारते हुए स्पष्ट करती है कि शिक्षक वास्तव में बालक के भविष्य निर्माता है l नीति में अध्यापक की शिक्षा गुणवत्ता भर्ती, पदस्थापना, सेवा शर्ते और शिक्षको के अधिकारों की स्थिति पर विशेष ध्यान दिया गया है l शिक्षको के उत्तरदायित्वो में जितनी वृद्धि हुई है उतनी ही शिक्षको के समक्ष चुनौतियों में भी आई है l और इन चुनौतियों का कैसे समाधान हो यही राष्ट्रीय शिक्ष नीति द्वारा स्पसष्ट करने का प्रयास किया गया है l वर्तमान एवं भविष्य के एक विशेष विनियोग का दर्जा दिया गया है l

NEP 2020 पांच स्तंभों पर टिकी एक इमारत है :- वहनीयता, अभिगम्यता, गुणवत्ता, न्यायपरकता और जवाबदेही l ये सभी शिक्षण-अधिगम को सुद्रढ़ एवं सुगम बनाने में सहायक होते है l इन्ही के आधार पर NEP 2020 के उद्देशयो का निर्धारण किया गया है l

नई शिक्षा नीति सतत विकास हेतु ‘एजेंडा 2030‘ के अनुकूल है l इसका उद्देश्य 21वी शताब्दी के अनुकूल स्कूल एवं कॉलेज के शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला बनाते हुए भारत को एक ज्ञान आधारित वैश्विक महाशक्ति के रूप में छात्रो की अद्वितीय क्षमता को प्रकट करना है l

- कुशल शिक्षक प्रशिक्षण के मानको को बढ़ाना,
- मौजूदा परीक्षा प्रक्रिया में सुधार करना ,
- शिक्षा में सार्वजानिक निवेश बढ़ाना ,
- राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (NEC) की स्थापना करना ,
- प्रोध्यौगिकी के मजबूत उपयोग एवं व्यावसायिक शिक्षा योजनाओं जैसे कारकों हेतु मूल्य सृजन करना l
- शिक्षा को इस प्रकार व्यवस्थित करना कि वह समाज को प्रतिकूल प्रतिस्थितियों के कुचक्र से बाहर निकल सके l

NEP2020 का विज़न

NEP का विज़न छात्रों हेतु कौशल, ज्ञान मूल्यों और जिम्मेदार प्रतिबद्धताओं को आत्मसात करने के आध्यात्मिक, बौदिक और व्यवहारिक मोडल को विकसित करने के लिए एक सचेत सीखने की प्रक्रिया को शामिल करता है l यह मानव अधिकारों, सतत विकास और जीवन एवं बेहतर शैक्षिक मानकों को मूल्य प्रदान करता है l नीति अनुसार उक्त तथ्यों पर ध्यान देने से ही शिक्षा की गुणवत्ता और शिक्षकों के उत्साह को वांछित मानक प्राप्त होगा l

NEP2020 मुख्य बिंदु

1. उच्च शिक्ष की दृष्टि से :- बहुविषयक संस्थान शुरू करने की नीति करना, मानविकी जैसे सभी क्षेत्रो पर ध्यान केन्द्रित करना l
2. नीति में (STEM) साइंस, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और मेडिसिन के साथ लिबरल आर्ट्स, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान पर जोर देने से एक उदार बहुविचायक एवं अनुशासनात्मकशिक्षा पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण की परिकल्पना की गई है l
3. NCTE द्वारा शिक्षको हेतु राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक NPST का विकास किया जाएगा l
4. वर्ष 2030 तक अध्यन हेतु न्यूनतम डिग्री योग्यता 4 वर्षीय एकीकृत B.Ed. डिग्री को अनिवार्य किया जाएगा l
5. एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP) का उद्देश्य NEP 2020 की नई स्कूल संरचना अनुसार शिक्षको को मूलभूत, प्रारंभिक, मध्य चरणों हेतु तैयार करना है l पाठ्यक्रम द्वारा छात्रो को भारतीय मूल्यों, भाषा, ज्ञान, लोकाचार, परम्परागत शिक्षा एवं शिक्षाशास्त्र में नवीन प्रगति की जानकारी देना l

शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम

वह कार्यक्रम, नीतियां, प्रक्रियाएं एवं प्रावधान जो भावी शिक्षको को कक्षा कक्ष, स्कूल एवं समाज में प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए जरुरी ज्ञान कौशल एवं दृष्टिकोण उपलब्ध कराते है । इन कार्यक्रमों द्वारा शिक्षको को तर्कसंगत विचार और चिंतन के शैक्षिक स्तम्भ बनाया जाता है ।

NEP 2020 के अनुसार शिक्षको को सीखने की प्रक्रिया का केंद्र बनाया जाएगा । इसी सन्दर्भ में शिक्षको को सलाना कम से कम 50 घंटे का CPD (सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण) करना होगा, इसमें कार्यशालाएं, सेमिनार, ऑनलाइन पाठ्यक्रम एवं सहकर्मी अधिगम के अवसर शामिल है । शिक्षको के उन्नयन हेतु नेशनल मेंटरिंग प्लान लाया जाएगा ।

शिक्षण/अधिगम में गुणवत्ता सुधार की दृष्टि से शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम को द्वि वर्षीय एवं चार वर्षीय इंटीग्रेटेड कार्यक्रम में निष्चित किया गया है, जिससे कि उच्च स्तरीय शिक्षा क्षेत्र की तार्किक एवं नैदानिक क्षमताओं को विकसित किया जा सके ।

- **शिक्षको की बदलती भूमिका**
  परिवर्तनों एवं सुधारो के दौर में शिक्षण व्यवसाय की कार्यात्मक गतिशीलता में भी परिवर्तन दृष्टिगत हुआ है जिससे उनकी परम्परागत भूमिका में बदलाव हुआ है । पहले शिक्षक विषय के विद्वान के रूप में ही जाने जाते थे लेकिन अब विषय विशेषज्ञ के साथ-साथ शिक्षक को एक सलाहकार, प्रबंधक, नवप्रवर्तक के रूप में भूमिका का निर्वाह करना होता है ।
- **शिक्षक एक शिक्षार्थी के रूप में**
  सफल शिक्षक वही माना जाता है जो स्वयं सदैव एक शिक्षार्थी के रूप में ज्ञानार्जन हेतु प्रयासरत रहें । 'स्टीव जाव्स' के अनुसार "भूखे रहें, बेवकूफ रहें" शिक्षको के सन्दर्भ में कही गयी एक बात है । उनके अनुसार शिक्षक को समय के साथ पाठ्यक्रम, विषयवस्तु और मान्यताएं सीखने हेतु सदैव तत्पर रहना चाहिए ।
- **शिक्षक एक सलाहकार**
  शिक्षक बाल्यावस्था से लेकर किशोरावस्था तक छात्रो से प्रत्यक्ष जुडाव रखता है , छात्रों से विशेषकर उच्च माध्यमिक एवं महाविद्यालयी छात्रो से खुली बातचीत एवं उनकी समस्याओं के समाधान हेतु उचित सलाह देने का कार्य वह करता है ।
- **आंकलनकर्ता के रूप में :-**
  RTE के कार्यान्वन पश्चात् अनुतीर्ण न करने एवं शारीरिक दंड न देने की नीतियों ने शिक्षको के समक्ष छत्रों के आंकलन में कठिनाइयाँ ही खड़ी की है, जिससे छात्रो की उपलब्धित वास्तविक परिणाम प्राप्त नहीं हो रहे है ।
- **नवप्रवर्तक के रूप में :-**
  परम्परागत आधार पर ज्ञान पाठ्यपुस्तकों से ही प्राप्त हो पाता था लेकिन अब तकनीकी युग के कारण शिक्षको द्वारा शिक्षण-अधिगम को नवप्रवर्तनकारी बनाने का प्रयास किया जा रहा है ।
- **विशेषज्ञ के रूप में** :- विषय की पकृति को, विद्यार्थी को समझते हुए समाज की वर्तमान एवं भावी आवश्यकतानुसार ज्ञान का प्रसरण करना शिक्षक का प्रमुख कार्य है । उसके अनुरूप बालक में अनुकूल शैक्षिक वातावरण व प्रोध्यौगिकी एवं यांत्रिकी उपकरणों के प्रयोग द्वारा ज्ञान का विकास किया जाता है ।
- **व्यावसायिक रूप में** ;- शिक्षक को अनुशासित रहते हुए समयानुसार पाठ्यक्रम पूरा करना, विद्यालयी जिम्मेदरियों को पूरा करना, विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु सह-शैक्षिक गतिविधियों को आयोजन इत्यादि शिक्षक को व्यावसायिक दृष्टि से महत्ता प्रदान करते है ।
- **अन्य** :

1. विषय सम्बंधित नवीन सूचनाओं की उपलब्धि के स्त्रोत के रूप में,
2. विद्यार्थियों के मध्य होने वाले विवादों के निपटारो में निर्णायक दृष्टि से,
3. छात्र पक्ष की ओर से नेतृत्व करने वाला,
4. छात्र प्रतिनिधि के रूप में,
5. निदानात्मक दृष्टि से छात्र सम्बंधित समस्याओं का समाधान करने वाला चिकित्सक ।
6. सामाजिक मूल्यों के संरक्षक के रूप में,
7. समन्वयक के रूप में,
8. पाठ-प्रदर्शक एवं मार्गदर्शक के रूप में ।

निष्कर्ष

कहना गलत नहीं होगा कि शिक्षक भविष्य निर्माता तो है ही साथ ही वर्तमान का संचालक भी है । अर्थात छात्र वर्ग शिक्षक के आदर्शो पर ही अनुकरण का प्रयास करते है और वर्तमान बदलती भूमिकाओं ने शिक्षक वर्ग के लिए शिक्षण-अधिगम को और अधिक चुनौतीपूर्ण बना दिया है

संदर्भ सूची

1. सक्सेना, राधा रानी (2002), "उभरते हुए भारतीय समाज में शिक्षा एवं शिक्षक". जयपुरः क्लासिक पब्लिकेशन्स ।

2. सिंह, सुरेश (2012), "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, इलाहाबाद अनुभव पब्लिसिंग हाउस ।

3. पाठक, आर०पी० (2010), "आधुनिक भारतीय शिक्षा, समस्याएँ", एवं समाधान नई दिल्लीः कनिष्क पब्लिशर्स।

4. यादव, वीरेन्द्र सिंह (2013), "भारतीय शिक्षा का बदलता परिदृश्य : चुनौतियाँ एवं समाधान की दिशाएँ" नई दिल्ली ओमेगा पब्लिकेशन्स ।

5. गुप्ता, मंजू (2007), "आधुनिक शिक्षण प्रतिरूप", नई दिल्लीः के०एस०के० पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स ।

6 सक्सैना, एन०आर० स्वरूप (2012). "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा", मेरठः आर० लाल बुक डिपो।

7. सिंह, राजेन्द्रपाल (2011), "तुलनात्मक शिक्षा के सिद्धान्त", जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

8. Ramachandran, Vimala. "The Position of teachers in our education system." Learning Curve (2016): 50-52.

9. Teacher- Role and Development. New Delhi: Indira Gandhi National Open University, 2004.

10. National Curriculum Framework for Teacher Education. New Delhi: National Council for Teacher Education, 2009-10.